यदि हम अपने पौराणिक इतिहास का दृष्यावलोकन करें, तो सबसे बड़े दानी के रूप में हमारे सामने कर्ण का नाम आता है- कर्ण से जिसने जो मांगा, उसने वह उसको दान में दिया, परंतु यहां हम देखते हैं कि कर्ण ने सदैव अर्थ का ही दान किया, परंतु वो योद्धा जो सर्वशक्तिमान था, धर्म का ज्ञाता था, जिसने अपने शीश तक का दान दे दिया, ऐसा अभूतपूर्व परमवीर योद्धा- एक मात्र और केवल एक बर्बरीक हुए हैं। बर्बरीक भी कर्ण के काल में ही पैदा हुए और कर्ण के साथ ही महाभारत युद्ध में अप्रकट भी हो गए।

अशोक सूरी
आध्यात्मिक लेखक

स्कंद पुराण में उल्लेख

बर्बरीक कुंती पुत्र महाबली भीम के पौत्र और अति बलशाली मायावी घटोत्कच के पुत्र थे। इनकी मां का नाम नागकन्या अहिलावती (कहीं-कहीं मोरवी) था। भारतीय पौराणिक परंपरा में कुछ पात्र ऐसे हैं, जो ग्रंथों में तो बहुत सीमित रूप से दिखाई देते हैं, परंतु लोक गाथाओं में विशाल स्वरूप धारण कर लेते हैं। बर्बरीक ऐसा ही एक नाम है, जो महाभारत के युद्ध में बिना कोई अस्त्र उठाए इतिहास में अमर हो गए। आगे चलकर यही वीर बर्बरीक खाटू श्याम के रूप में लोक आस्था का केन्द्र बने और घर-घर पूजे जाने लगे। बर्बरीक की कथा मुख्य रूप से स्कंद पुराण के कौमारिका एवं रेवा खंड में मिलती है, परंतु यहां भी बर्बरीक नाम का उल्लेख नहीं मिलता है। वर्तमान में उपलब्ध स्कंद पुराण के अवंती खंड/ रेवा खंड में श्याम/श्यामदेव की कथा का संकेत है, जिसको कलियुग में पूजे जाने का वरदान भगवान श्री कृष्ण ने दिया है और शीशदान की स्वीकृति प्रदान की है।

प्रचलित श्लोक

शीशं मे देवदेवेश गृहाण पुरुषोत्तम। युद्ध दर्शनमिच्छामि तव प्रसादान्महामुने।। अर्थात हे पुरुषोत्तम मेरा यह शीश स्वीकार कीजिए एवं मैं आपकी कृपा से इस महायुद्ध का साक्षी बनना चाहता हूं। इसके अलावा एक और श्लोक आता है कि कलौ त्वं श्यामनामा पूज्यः सर्वजन प्रियः। भविष्यसि महामात्र भक्तानां फलदायकः।। अर्थात कलयुग में तुम श्याम नाम से पूजे जाओगे और तुम सबके प्रिय और भक्तों को वांछित फल प्रदान करने वाले होगे। पूर्व में आप श्याम के नाम से ही जाने जाते रहे और इसी नाम से आपका पूजन भी होता रहा।

बर्बरीक: करुणा, त्याग और धर्म-संतुलन का अमर प्रतीक

महाभारत का मौन साक्षी

पौराणिक कथाओं के अनुसार बर्बरीक एक अद्भुत वीर थे, जिन्होंने देवी की घनघोर तपस्या की थी। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर देवी ने भगवान शिव से बर्बरीक को वरदान देने की प्रार्थना की। भगवान शिव ने बर्बरीक को तीन अचूक बाण प्रदान किए। ये सामान्य बाण नहीं, बल्कि दिव्य और चेतन अस्त्र थे, जो युद्धभूमि में स्वयं ही शत्रु और मित्र का भेद कर सकते थे। इन्हीं बाणों के कारण बर्बरीक अपार शक्ति के स्वामी बने और एक श्रेष्ठ वीर के रूप में विख्यात हुए। बर्बरीक की विशेषता केवल उनकी शक्ति नहीं थी, बल्कि उस शक्ति पर उनका विवेकपूर्ण नियंत्रण भी था। जब उनकी माताश्री को अपने पुत्र की अद्भुत सामर्थ्य का ज्ञान हुआ, तो उन्होंने उससे एक ही प्रतिज्ञा करवाई-कि वह इन बाणों का उपयोग केवल असहाय और कमजोर समाज की रक्षा के लिए करेगा। उन्होंने पुत्र से यह भी कहा कि उसे सदैव युद्ध में हारने वाले पक्ष का साथ देना होगा। बर्बरीक ने मां की इस आज्ञा और प्रतिज्ञा का जीवनपर्यंत पालन किया। इसी कारण वे "हारे का सहारा" कहे गए।

घटोत्कच की मृत्यु के बाद बर्बरीक ने युद्ध में जाने की अनुमति मांगी। मां ने उन्हें विदा करते समय फिर से उनकी प्रतिज्ञा स्मरण कराई। महाभारत के युद्ध में उस समय कौरवों की स्थिति कमजोर थी और वे पराजय के निकट थे। अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार बर्बरीक ने कौरवों के पक्ष में युद्ध करने का निर्णय लिया। परंतु यह स्थिति धर्म के संतुलन के लिए घातक थी। भगवान श्रीकृष्ण, जो पांडवों के पक्ष में थे, बर्बरीक की शक्ति और उनकी प्रतिज्ञा को भली-भांति समझ गए। उन्होंने बर्बरीक से युद्ध में आने का कारण पूछा। बर्बरीक ने स्पष्ट किया कि वह सदैव हारने वाले का साथ देता है। यह भाव करुणा से उपजा था, किंतु धर्म की दृष्टि से विनाशकारी हो सकता था।

श्रीकृष्ण ने बर्बरीक की शक्ति की परीक्षा ली, जिसमें वे पूर्णतः सफल हुए। तब भगवान को एक कठोर और अप्रिय निर्णय लेना पड़ा। ब्राह्मण के वेश में उन्होंने बर्बरीक से शीश का दान मांगा। महादानी बर्बरीक ने दान स्वीकार किया, परंतु पहले भगवान का वास्तविक स्वरूप देखने की इच्छा प्रकट की। श्रीकृष्ण के दर्शन के बाद बर्बरीक ने कहा कि अब जीवन का कोई प्रयोजन नहीं बचा। उन्होंने केवल एक इच्छा रखी-युद्ध को अंत तक देखने की। भगवान के "एवमस्तु" कहते ही बर्बरीक ने अपना शीश अर्पित कर दिया। श्रीकृष्ण ने उस शीश को एक ऊंचे टीले पर स्थापित किया, जहां से वह संपूर्ण युद्ध देख सका। इस महान त्याग के फलस्वरूप भगवान ने उन्हें आशीर्वाद दिया कि कलियुग में वे उनके ही नाम "श्याम" से पूजे जाएंगे। यही श्याम आगे चलकर खाटू श्याम के रूप में विख्यात हुए।

राजस्थान के सीकर में प्रमुख धाम

राजस्थान के सीकर जिले में स्थित खाटू उनका प्रमुख धाम है- जहां श्याम केवल एक पौराणिक स्मृति नहीं, बल्कि लोक आस्था के जीवंत देवता हैं। लोक कथाओं में प्रचलित है कि बर्बरीक के शीश का खाटू में प्राकट्य हुआ था। खाटू श्याम की विषेशता यह है कि यहां श्याम राजा नहीं, सेवक के रूप में पूजे जाते हैं, जबकि द्वारका में द्वारिकाधीश के रूप में पूजे जाते हैं। खाटू श्याम युद्ध जिताने वाले देव नहीं हैं, अपितु संकट में साथ देने वाले आराध्य हैं। लोक कथाओं के अनुसार खाटू के राजा रूपसिंह की पत्नी नर्मदा कंवर को स्वप्न में भगवान के शीश के प्रकट होने का आभास हुआ था, जिसके बाद राजा रूपसिंह चौहान ने सन् 1027 ई. में इस स्थान पर प्रथम मंदिर का निर्माण करवाया। इसके उपरांत सन् 1727 में मारवाड़ के दीवान अभय सिंह ने मंदिर का भव्य जीणोद्धार करवाया। मंदिर के निर्माण में मकराना के प्रसिद्ध सफेद संगमरमर का उपयोग हुआ है तथा गर्भगृह के दरवाजों की परतों को चांदी से मढ़ा गया है। मंदिर के पास ही श्याम कुंड स्थित है, जहां बाबा का पावन शीश प्रकट हुआ था। श्याम बाबा का पूजन गंध, पुष्प, धूप, दीप एवं भोग से किया जाता है। बाबा को भोग में विशेष रूप से चूरमा मिश्री मावा, खीर या पेड़े का भोग लगाया जाता है। बाबा को मुख्य रूप से ध्वजा को विजय प्रतीक के रूप में अर्पित करते हैं। भक्तों को मोरछड़ी से आशीर्वाद प्राप्त होता है। 21 फरवरी से 28 फरवरी तक खाटूश्याम जी मंदिर में श्रद्धा, भक्ति और उल्लास से परिपूर्ण फाल्गुन लक्खी मेले का आयोजन किया जाएगा।

पौराणिक कथा

सुदामा और भगवान श्रीकृष्ण की माया

एक बार सुदामा ने श्रीकृष्ण से जिज्ञासावश पूछा, "कान्हा, मैं आपकी माया के दर्शन करना चाहता हूं। माया वास्तव में होती कैसी है?" श्रीकृष्ण यह प्रश्न टालना चाहते थे, पर सुदामा की जिद के आगे मुस्कराते हुए बोले, "अच्छा, समय आने पर तुम्हें स्वयं दिखा दूंगा।" एक दिन कृष्ण ने कहा, "सुदामा, आओ, गोमती में स्नान करने चलें।" दोनों गोमती नदी के तट पर पहुंचे, वस्त्र उतारकर जल में उतरे। कुछ ही क्षणों में श्रीकृष्ण स्नान कर तट पर लौट आए और अपना पीतांबर पहनने लगे। सुदामा ने सोचा-मैं भी एक डुबकी और लगा लेता हूं। जैसे ही उसने डुबकी लगाई, भगवान ने उसे अपनी माया के दर्शन करा दिए। सुदामा को लगा कि गोमती में अचानक बाढ़ आ गई है और वह बहता जा रहा है। किसी तरह वह एक घाट के पास रुका और बाहर निकला। चारों ओर एक अनजान नगरी थी। वह आगे बढ़ा तो देखा-एक हथिनी आई और उसके गले में फूलों की माला डाल गई। लोग इकट्ठे हो गए और बोले, "हमारे राजा का देहांत हो गया है। परंपरा है कि हथिनी जिसके गले में माला डाल दे, वही राजा होता है। अब आप हमारे राजा हैं।"

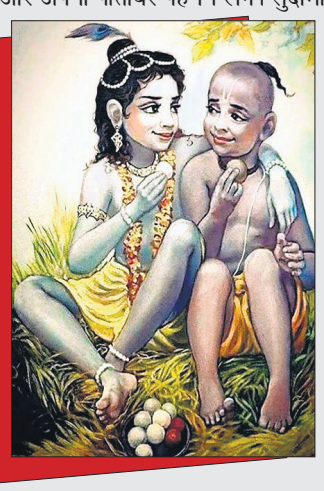

सुदामा आश्चर्यचकित रह गया। उसका राजतिलक हुआ, राजकन्या से विवाह हुआ और समय के साथ उसके दो पुत्र भी हुए। जीवन सुख से चल रहा था कि एक दिन उसकी पत्नी गंभीर रूप से बीमार पड़ी और अंततः चल बसी। सुदामा शोक में डूब गया। तभी लोगों ने कहा, "मायापुरी का नियम है-राजा को अपनी रानी के साथ चिता में प्रवेश करना होता है।"

यह सुनते ही सुदामा घबरा गया। उसे लगा- मेरी तो मृत्यु नहीं हुई, फिर मैं क्यों जलूं? अब उसे पत्नी का शोक भूलकर अपनी ही चिंता सताने लगी। उसने कहा, "मैं इस नगरी का निवासी नहीं हूं।" पर कोई नहीं माना। अंत में उसने विनती की-"मृत्यु से पहले मुझे स्नान करने दो।" पहरे के साथ उसे नदी तक ले जाया गया। डर से कांपते हुए सुदामा ने जैसे ही जल में डुबकी लगाई और बाहर आया- मायानगरी लुप्त थी। सामने वही गोमती तट था और श्रीकृष्ण अभी भी पीतांबर पहन रहे थे। सुदामा फूट-फूट कर रोने लगा।

श्रीकृष्ण ने अनजान बनते हुए पूछा, "सुदामा, क्यों रो रहे हो?" सुदामा बोला, "प्रभु, जो मैंने देखा- वह सत्य था या यह?" कृष्ण मुस्कराए-"जो देखा, भोगा वह माया थी, स्वप्न था। सत्य तो मैं हूं। माया अज्ञान है, आत्म-विस्मरण है। जो मुझे जान लेता है, उसे माया बांध नहीं पाती।" सुदामा समझ गया और जो समझ गया, वह श्रीकृष्ण से भिन्न कैसे रह सकता है।

बोधकथा

ईमानदारी का फल

एक था चेकपोस्ट का अधिकारी, धीरज। वह अत्यंत ईमानदार, संतोषी और कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति था। भ्रष्टाचार के इस युग में ऐसे व्यक्ति का जीवन आसान नहीं होता। चारों ओर से समझौते की नीति अपनाने का दबाव रहता, छोटे-बड़े लोग तरह-तरह से उसे प्रभावित करने का प्रयास करते, परंतु धीरज अपने सिद्धांतों पर अडिग रहा। बार-बार होने वाले स्थानांतरण उसकी दिनचर्या का हिस्सा बन चुके थे, किंतु उसने कभी शिकायत नहीं की।

एक बार उसने तस्करी का एक बड़ा माल पकड़ा। माल का मालिक एक प्रभावशाली व्यापारी था, जिसके संबंध बड़े-बड़े राजनेताओं और अधिकारियों से थे। पहले तो उसने धीरज को प्रलोभन देने का प्रयास किया और यहां तक कह दिया कि यदि वह आंख मूंद ले तो पचास लाख रुपये देने को तैयार है, पर धीरज तनिक भी विचलित नहीं हुआ। इसके बाद नेताओं और मंत्रियों के फोन आने लगे, दबाव डाला जाने लगा, किंतु उसने किसी की नहीं सुनी। उसने नियमों के अनुसार चालान किया और पूरा माल जब्त कर लिया। मामला न्यायालय पहुंचा, परंतु धन और प्रभाव के बल पर केस शीघ्र ही खारिज हो गया। ऊपर से मंत्रियों की नाराजगी का परिणाम यह हुआ कि धीरज को अपनी नौकरी से भी हाथ धोना पड़ा। इतनी बड़ी क्षति के बाद भी वह टूटा नहीं। उसका आत्मसम्मान और ईमानदारी आज भी उतनी ही दृढ़ थी। कुछ समय बाद एक बड़े उद्योगपति को इस पूरी घटना की जानकारी मिली। उसने धीरज को बुलाया और उसकी निष्ठा से प्रभावित होकर अपनी कंपनी में सर्वोच्च पद पर सम्मान सहित नियुक्त कर लिया। यहां उसे न केवल पहले से अधिक वेतन मिला, बल्कि सभी आवश्यक सुविधाएं भी प्राप्त हुईं। धीरज अब पहले से भी अधिक सतर्क और जिम्मेदार हो गया। वह मालिक के हितों की रक्षा करता और अधीनस्थ कर्मचारियों के अधिकारों तथा कल्याण का विशेष ध्यान रखता।

प्रत्येक माह वह सभी कर्मचारियों की बैठक करता, जिसमें कर्तव्यनिष्ठा, ईमानदारी, संतोष और परोपकार जैसे मूल्यों पर चर्चा करता। उसके नेतृत्व में कंपनी निरंतर उन्नति करने लगी। एक दिन उसने उद्योगपति को धन की असारता का बोध कराते हुए शिक्षा, चिकित्सा और असहायों की सहायता के लिए एक ट्रस्ट बनाने का सुझाव दिया। उद्योगपति ने सहर्ष यह प्रस्ताव स्वीकार किया और धीरज को ही ट्रस्ट का सचिव बना दिया। अब कंपनी की आय का एक निश्चित अंश लोककल्याण के कार्यों में व्यय होने लगा। ठीक ही कहा गया है-धन तो बहुतों को मिल जाता है, पर उसका सदुपयोग वही कर पाता है, जिसके जीवन में ईमानदारी और पुण्य का प्रकाश हो।

क्यों लगता है मृत्यु से डर

मृत्यु जीवन का विश्राम स्थली हैं, जहां जीवात्मा अपनी थकान दूर करती, नये जीवन के लिए शक्ति प्रदान करती है। थकान दूर करने के लिए विश्राम तो नित्य ही करते हैं। पुनः नई शक्ति एवं स्फूर्ति से दैनिक कार्यों में जुड़ जाते हैं। विश्रामावधि में जाने में ना तो डर लगता है, ना ही किसी प्रकार की कठिनाई अनुभव होती है। विश्राम के अभाव में तो व्यय हुई शक्ति की आपूर्ति नहीं हो पाती। काया कमजोरी तथा श्रम के अयोग्य हो जाती है। जीवन भर की थकान को मिटाने के लिए भावी जीवन के लिए शक्ति प्राप्त करने के उद्देश्य से मृत्यु रूपी विश्राम अवधि भी उतनी ही आवश्यक है। काया-परिवर्तन इसलिए आवश्यक हो जाता है कि लंबी अवधि तक श्रम करने के कारण वह इस योग्य नहीं रहती कि कठोर श्रम कर सके। पुराने फटे वस्त्रों को बदलकर, नये पहन लिए जाते हैं। जर्जर हो गई मशीनों को पूर्ण रूपेण परिवर्तित कर देना ही उचित होता है।

शिवानंद मिश्रा
लेखक

इन परिवर्तनों में ना तो किसी प्रकार का दुराग्रह होता है, ना आसक्ति और नहीं किसी प्रकार का भय। नये के प्रति, परिवर्तन के प्रति भयभीत हो जाने अथवा पुरातन के प्रति आसक्ति बने रहने से उन लाभों से वंचित रह जाना पड़ता है, जो नए वस्त्रों एवं वस्तुओं से मिलता है। मृत्यु के संबंध में यही बात लागू होती है।

मृत्यु इसलिए भी आवश्यक एवं उपयोगी है कि जीव नये जीवन का, परिवर्तन का आनंद ले सके। मृत्यु का क्रम रुक जाय, उस स्थिति की कल्पना की जाय तो पता चलता है कि जीवन कितना नीरस एवं उभरा होगा। लंबी आयु, अमर काया, जर्जर, अशक्त बनी लाश ढोने के समान होगी, बुढ़ापा वैसे ही कितना नीरस भार भरा प्रतीत होता है। उस पर भी यदि उसके साथ अमरता का वरदान जुड़ जाए तो कितनी कठिनाई होगी। निश्चित ही कोई विचारशील, काया रूपी अमरता को स्वीकार न करना चाहेंगे। असमर्थ, अशक्त, जराजीर्ण काया की गठरी के बोझ को कौन सदा ढ़ोना चाहेगा? फिर मृत्यु से डर क्यों लगता है? शरीर के प्रति आसक्ति क्यों बनी रहती है? इन कारणों पर विचार करने पर पता चलता है, कि मृत्यु एवं जीवन के स्वरूप की वास्तविक जानकारी न होने के कारण ही भय लगता है। हमारी सत्ता शरीर से अलग है-शाश्वत, अविनाशी एवं अमर है। यह बोध बना रहे तो मृत्यु की आशंका से भयभीत होने का कोई कारण नहीं दिख पड़ता। शरीर सत्ता को ही सब कुछ मान लेने, मृत्यु के साथ जीवन का अंत समझ लेने से डर लगता है। शास्त्र इसलिए निर्देश देते हैं कि अपनी सत्ता को जानो और पहचानो, शास्त्रों का प्रत्येक को अध्ययन करना चाहिए।

आचार्य मधुरेंद्र पांडेय
ज्योतिष एवं वास्तु विशेषज्ञ

सास-बहू का रिश्ता: वास्तु शास्त्र से सामंजस्य की राह

हर परिवार में सास-बहू का बंधन अनमोल होता है, लेकिन कभी-कभी छोटे-मोटे मतभेद इसकी मिठास कम कर देते हैं। वास्तु शास्त्र कहता है कि घर की दिशाओं में संतुलन लाकर दोनों पक्षों से प्रयास करने पर ये रिश्ता और मजबूत हो सकता है। सास और बहू दोनों मिलकर ये उपाय अपनाएं, तो प्रेम और समझदारी घर की शान बनेगी।

- **दोनों के लिए शुभ आरंभ-** सास-बहू संयुक्त रूप से गुरुवार या शुक्रवार से उपाय शुरू करें, ये दिन पारिवारिक एकता के प्रतीक हैं। यदि तनाव ज्यादा हो, तो शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा से प्रारंभ करें। सभी उपाय 40-45 दिनों तक निरंतर करें, फिर जीवनभर आदत बनाएं। इससे सकारात्मक ऊर्जा घर में बनी रहेगी।
- **वायु कोण: संवाद की कुंजी-** घर के उत्तर-पश्चिम कोण (वायु कोण) को साफ रखें, कचरा या टूटा सामान न रखें। चांदी की कटोरी में केसर-कपूर भरकर रखें, हर शनिवार बदलें। सास या बहू इसे 43 दिनों तक संभालें, संवाद में मधुरता आएगी।
- **अग्नि कोण: प्रेम का प्रकाश-** दक्षिण-पूर्व (अग्नि कोण) में शाम को लाल बल्ब जलाएं। सास या बहू कोई भी 45 दिनों तक रोजाना करें। ये उपाय गलतफहमियां दूर कर सास-बहू में विश्वास जगाता है।
- **ईशान कोण: शांति का आधार-** उत्तर-पूर्व दिशा हमेशा स्वच्छ रखें, कूड़ेदान न रखें। पूजा स्थल यहीं बनाएं। रोज साफ करने का संकल्प लें, 40 दिनों में शांति का प्रभाव दिखने लगेगा।

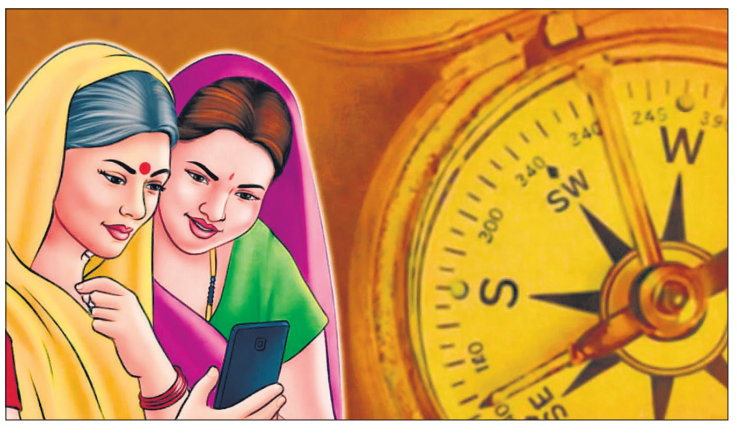

- **शयनकक्ष व्यवस्था: सम्मान का स्थान-** सास का कमरा दक्षिण-पश्चिम में, बहू का पश्चिम या दक्षिण में रखें। दोनों कमरों में लाल फ्रेम वाली संयुक्त फोटो लगाएं। शुक्रवार से स्थापित कर 21 दिनों तक रोज प्रणाम करें।
- **दैनिक वास्तु आदतें-** सूर्योदय पूर्व घर साफ करें, गुड़युक्त जल सूर्य को अर्घ्य दें। रोज पहली रोटी गुड़ सहित गाय को दें। गुरुवार से अपनाएं, 48 दिनों बाद स्थायी करें। झगड़े कम होते हैं।
- **सास के लिए खास उपाय-** अगर आप बहू हैं, तो रोज सुबह सास के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लें और अगर आप सास हैं, तो रोज सुबह बहू को आशीर्वाद दें भले वो आपका पैर छुए न छुए, फिर घर संभालने दें। गुरुवार को केसर तिलक लगाएं। 40 दिनों का कोर्स पूरा करें। ये वास्तु ऊर्जा संतुलित कर प्रेम स्थापित करते हैं।

विशेष वास्तु उपाय

भूमि कोण (दक्षिण-पूर्वी मध्य) रहस्य

घर के दक्षिण-पूर्वी मध्य भाग (भूमि तत्व क्षेत्र) में एक छोटा सा तांबे का लोटा रखें, जिसमें 7 जौ के दाने और गुड़ का टुकड़ा डालें। इसे लाल कपड़े से ढकें और कभी न हिलाएं। सास इसे स्थापित करें, बहू रोज जल चढ़ाएं। 21 दिनों में मनमुटाव गायब हो जाएगा।

नीलिमा यंत्र स्थापना

ईशान कोण के नीचे भूमि में (या अलमारी में) नीले रंग का त्रिकोणाकार यंत्र (नीलिमा यंत्र) दबाएं, जो बहू-सास की एकता का प्रतीक है। इसे शुक्रवार को केसर से स्थापित करें। 108 दिनों तक सक्रिय रहेगा, झगड़े जड़ से समाप्त हो जाएगी।

वास्तु पिरामिड संधि

घर के केंद्र (ब्रह्मस्थान) में पारदर्शी कांच का छोटा पिरामिड रखें, जिसके नीचे सास-बहू की संयुक्त फोटो (बिना फ्रेम) हो। रोज शाम 5 मिनट ध्यान करें। ये ऊर्जा संधि उपाय दोनों के कर्म बंधन को जोड़ता है, 40 दिनों में प्रेम स्वाभाविक हो जाता है।

शयन ऊर्जा समन्वय

सास के बिस्तर के नीचे बहू के नाम वाली सफेद मोमबत्ती (बिना जलाई) रखें और बहू के बिस्तर के नीचे सास के नाम वाली सफेद मोमबत्ती (बिना जलाई) रखें। इसे हर पूर्णिमा बदलें। ये उपाय निद्रा के दौरान वास्तु तरंगों को एकाकार करता है, सपनों में भी प्रेम का संचार होता है।